राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 रु.

472

योद्धा

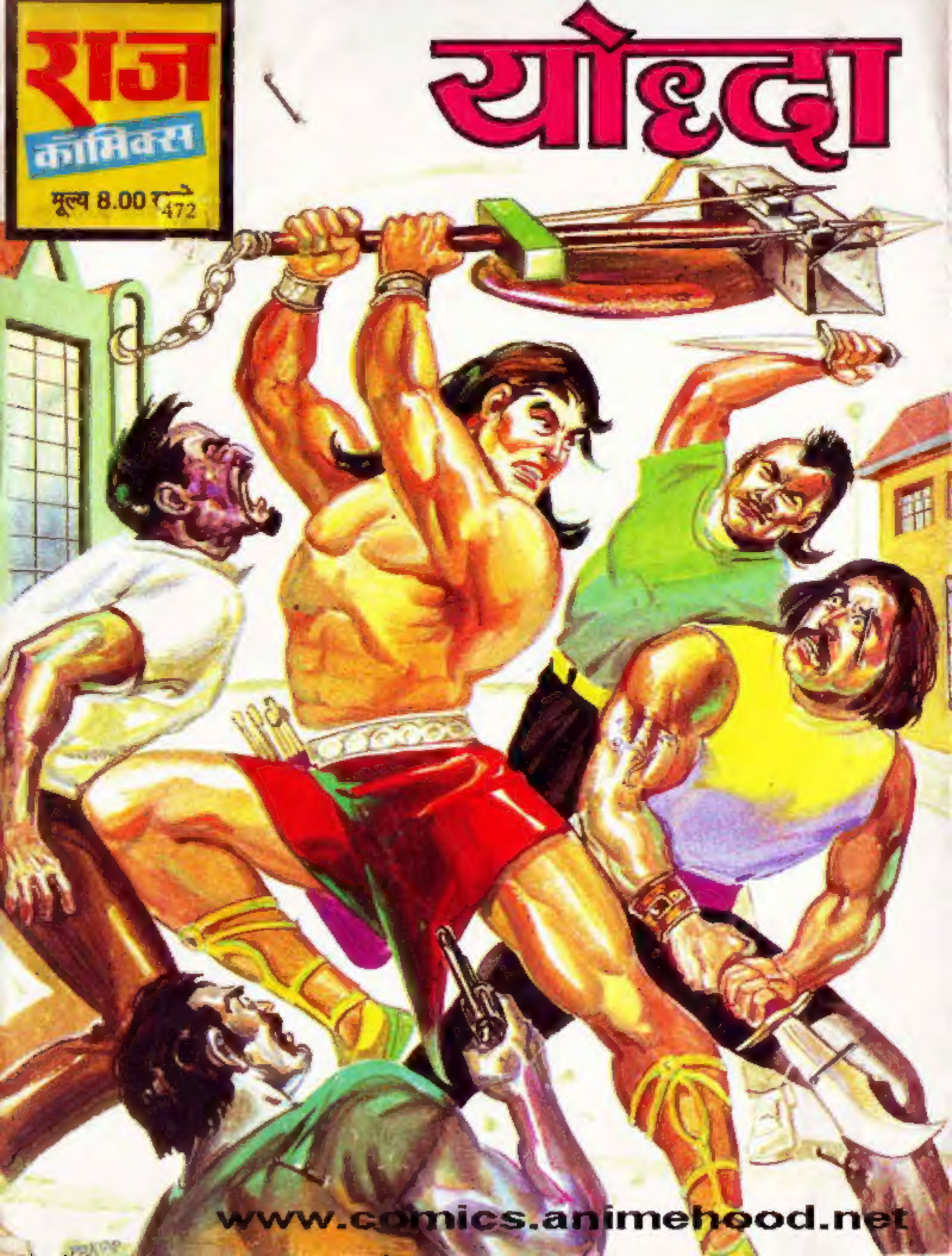

www.comics.animehood.net

योद्धा

लेखक :
टी.आर.सिप्पी

चित्र :
विनोदकुमार

सम्पादक : मनीष गुप्ता

पृथ्वी- जिस पर हजारों जलजले आए और मौत का तांडव मचाते रहे-

पृथ्वी- हर विध्वंस के बावजूद भी करती रही अपना निर्माण-

और आज भी लगता था डगमगा गई है धरा अपनी धुरी से-

उथल-पुथल की यह परंपरा सदियों से चली आ रही है-

आज भी आ रहा था एक जलजला-

एक तूफान-

एक विस्फोट-

भयंकर विस्फोट-

© RAJ POCKET BOOKS

वसुंधरा की छाती पर मकड़ी के जालों के समान खिंच गई अनेक ...

दरारें-

कड़ड़ कड़ड़... कड़...कड़

और ...उन्हीं दरारों में से एक में नज़र आ रही थी एक आकृति-

आकृति जो इंसानी ही थी !

हुई उसमें हलचल...

उठ खड़ी हुई शौर्य व पराक्रम की वह मूर्त...

कौन है यह सूरवीर ?

कहां से आया है ?

उस पराक्रमी पुरुष की नजरें आश्चर्य का तूफान समेटे थीं–
यह क्या हो गया अचानक ? सारी दुनिया ही बदल गई यह तो...
राहत–राजनगर।
यह कौन है ?
किसी नाटक कम्पनी से सीधा निकलकर आ रहा है।
??
?!
राह चलते लोगों की निगाहों का अनायास केन्द्र बन गया था वह शख्स-
उससे भी विचित्र था उसका हथियार ढकमानघन–
ढकमानघन के हीरे पर नजर थी कुछ असामाजिक तत्त्वों की–
मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं उस हीरे की कीमत लाखों में होगी।
नकली तो नहीं है वह ?
पूरी उम्र हीरों की दलाली में गुजर गई है मेरी।

मगर... वह हीरा उसने इतनी बेखबरी से क्यों लगा रखा है अपने हथियार पर...
छोड़ न... हमें क्या, हमारा काम तो उसे लूटना है।

अचानक-
सुनसान जगह पर-
खबरदार? अपना यह हथियार हमें दे दे...
वर्ना तेरे पेट की सारी अंतड़ियां निकाल देंगे।

आश्चर्य मिश्रित था उसका स्वर-
क्या ढकमानधन... तुम्हें दे दूं?

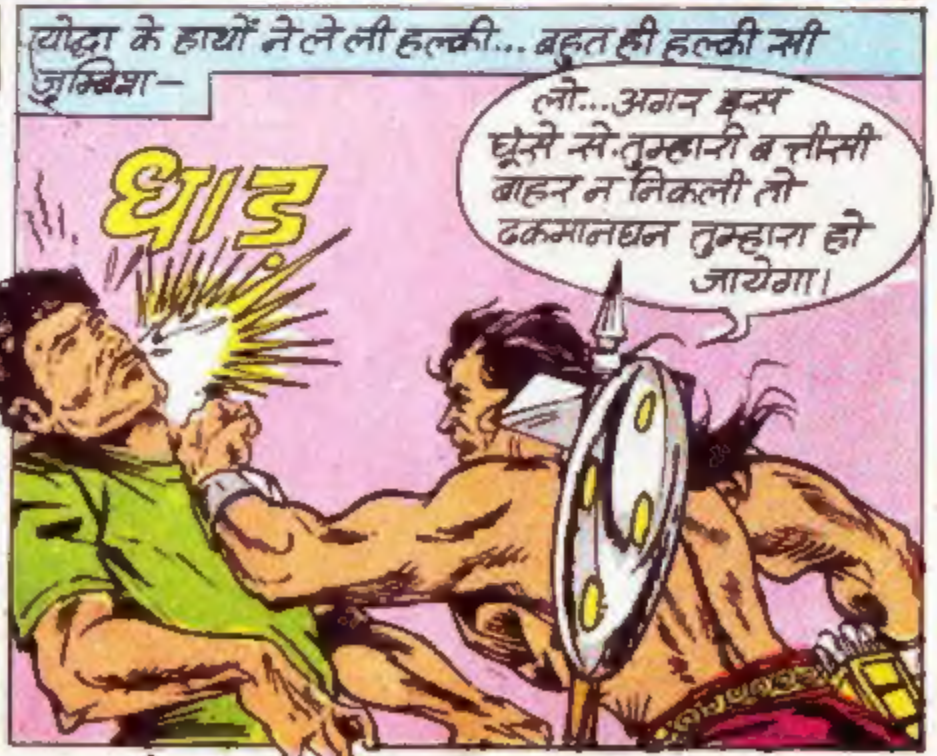
योद्धा के हाथों ने ले ली हल्की... बहुत ही हल्की सी जुम्बिश-
धाड़
लो...अगर इस घूंसे से तुम्हारी बत्तीसी बाहर न निकली तो ढकमानधन तुम्हारा हो जायेगा।

और सचमुच–

तत्काल चीते की भांति हरकत में आये बाकि दो के शरीर भी–

इसने पन्ने खां की बत्तीसी झाड़ दी।

खत्म कर दो साले को।

पर बेचारे क्या जानते थे कि उनके सामने है अपने समय का योद्धा–

योद्धा के हर वार पर गूंज रही थी उनके हलक से चीखें–

योद्धा के हाथ मशीन की भांति चले–

धड़ाम

धिशुम

पस्त होने लगे हमलावरों के हौंसले–

चाकुओं के वस से बाहर हो चली बात जब...
तो नाच उठा
फिरौल हाथ में-
हा हा हा...
अब बोल, कर
दें तुझे खत्म!
????

वह यूं चौंका मानो उसकी आंखों के आगे
कोई अजूबा नाच उठा हो-
यह.. यह
यह तो...

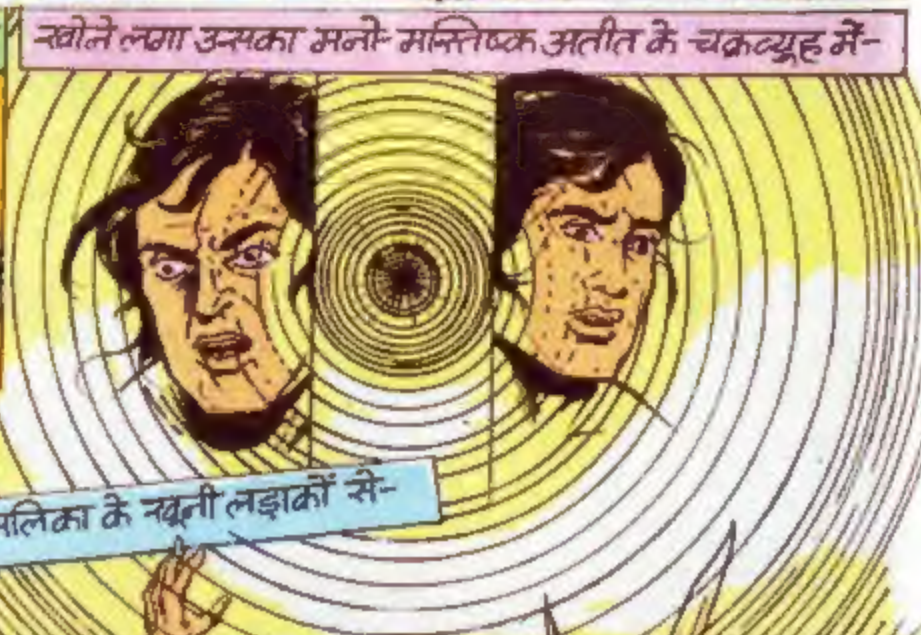
खोने लगा उसका मनो-मस्तिष्क अतीत के चक्रव्यूह में-

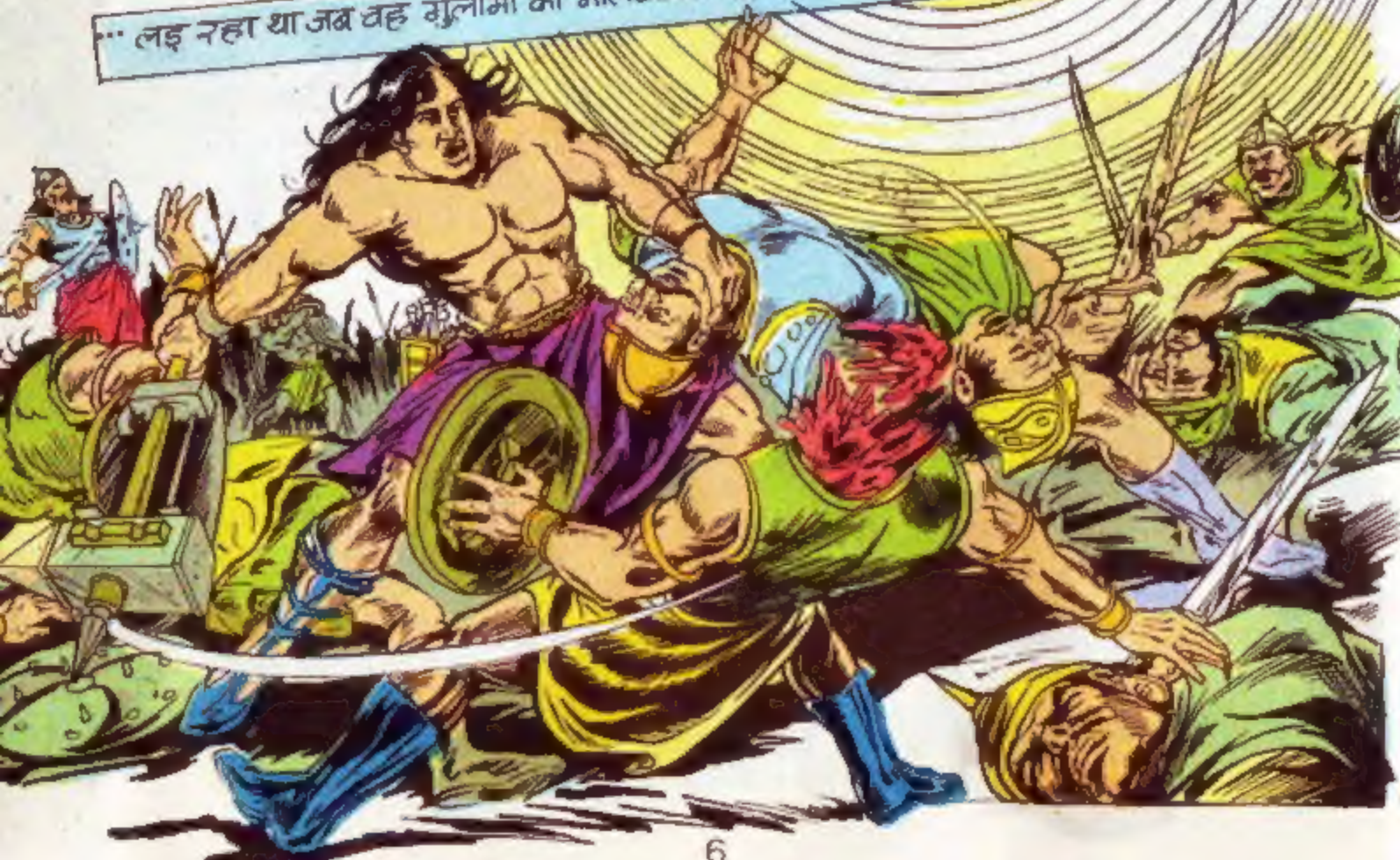
... लड़ रहा था जब वह गुलामों की मलिका के खूनी लड़ाकों से-

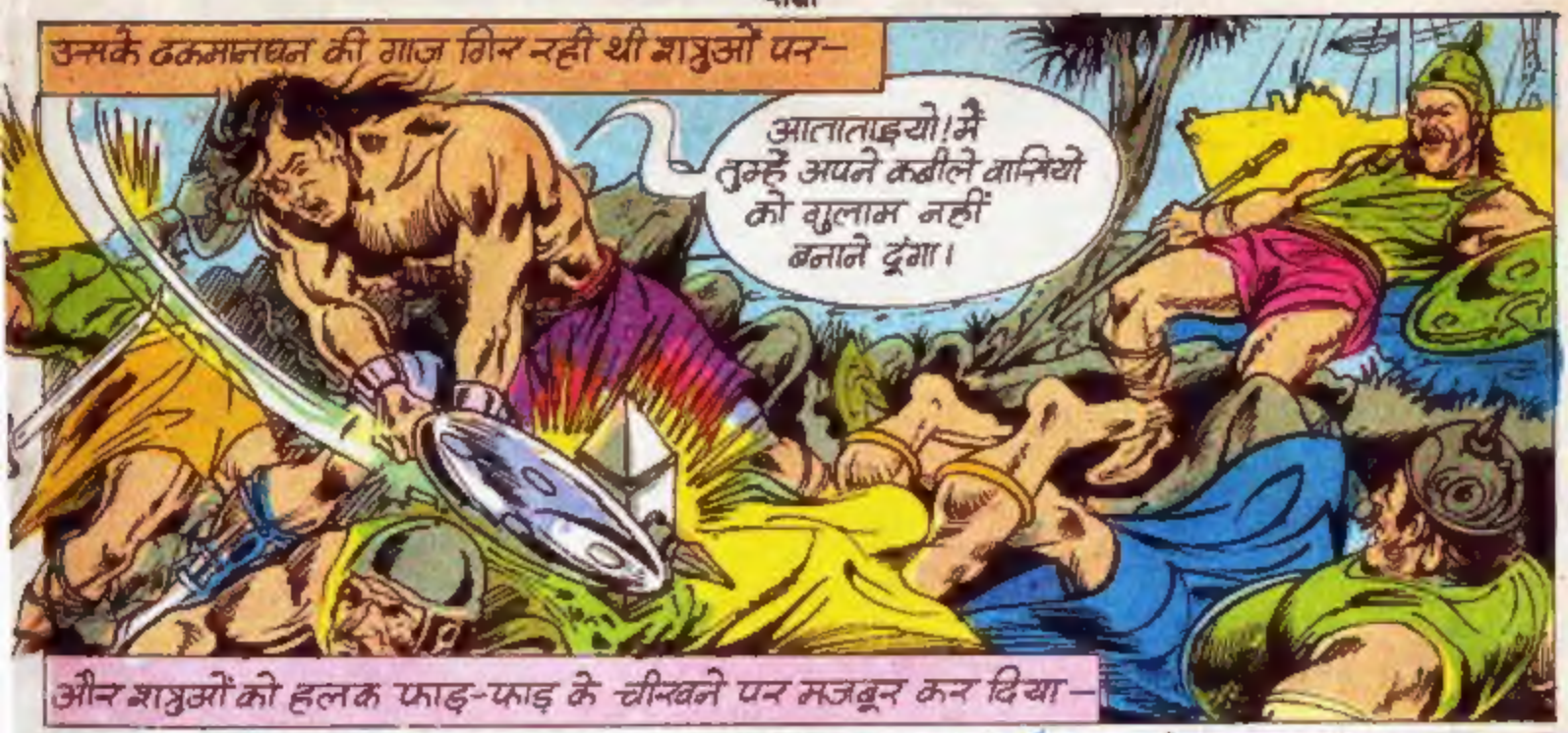
उसके ढकमानघन की गाज गिर रही थी शत्रुओं पर–
आताताइयो! मैं तुम्हें अपने कबीले वासियों को गुलाम नहीं बनाने दूंगा।
और शत्रुओं को हलक फाड़-फाड़ के चीखने पर मजबूर कर दिया–

लड़ाकों का सरदार आंखें फाड़े उस हैरत अंगेज लड़ाके को देख रहा था–
कौन... कौन है यह? जो अकेला ही हमारे रास्ते में लोहे की दीवार की भांति अड़ा है।
सरदार सब लोग इसे कहते हैं... योद्धा।

सिसकार उठा बल्लार–
योद्धा

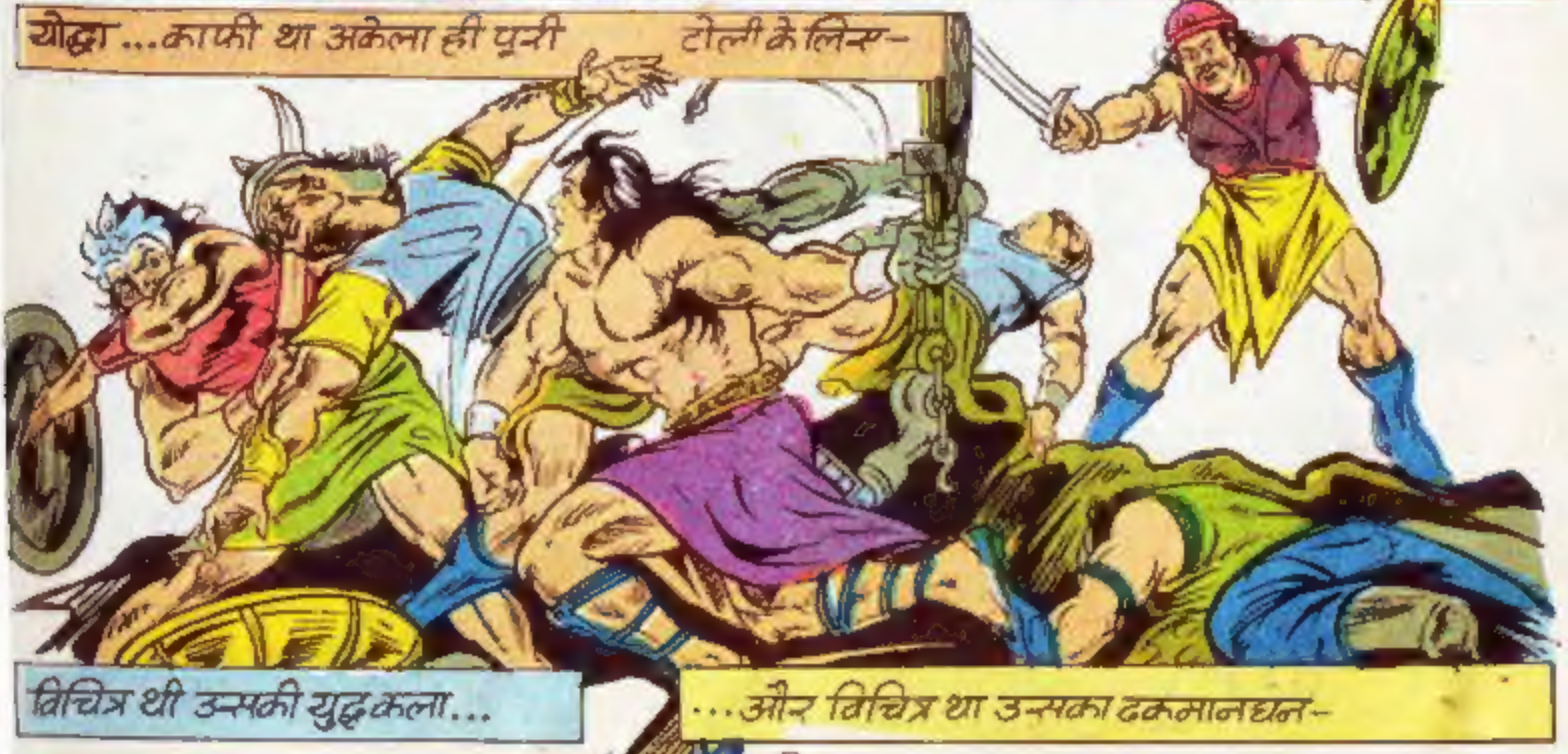
योद्धा ...काफी था अकेला ही पूरी टोली के लिए–
विचित्र थी उसकी युद्ध कला...
...और विचित्र था उसका ढकमानघन–

सात ताइयों का लहू पानी की भांति बह उठा-
उसके ढकमानघन के कई रूप थे-
एक यह भी था-
बिलबिला उठे शत्रु उन तीरों की मार से-
बचाव के लिए ढाल भी था वही ढकमानघन-
तो प्रहार के लिए हथौड़ा भी-
और... और भाले का काम भी दे देता था, ढकमानघन-

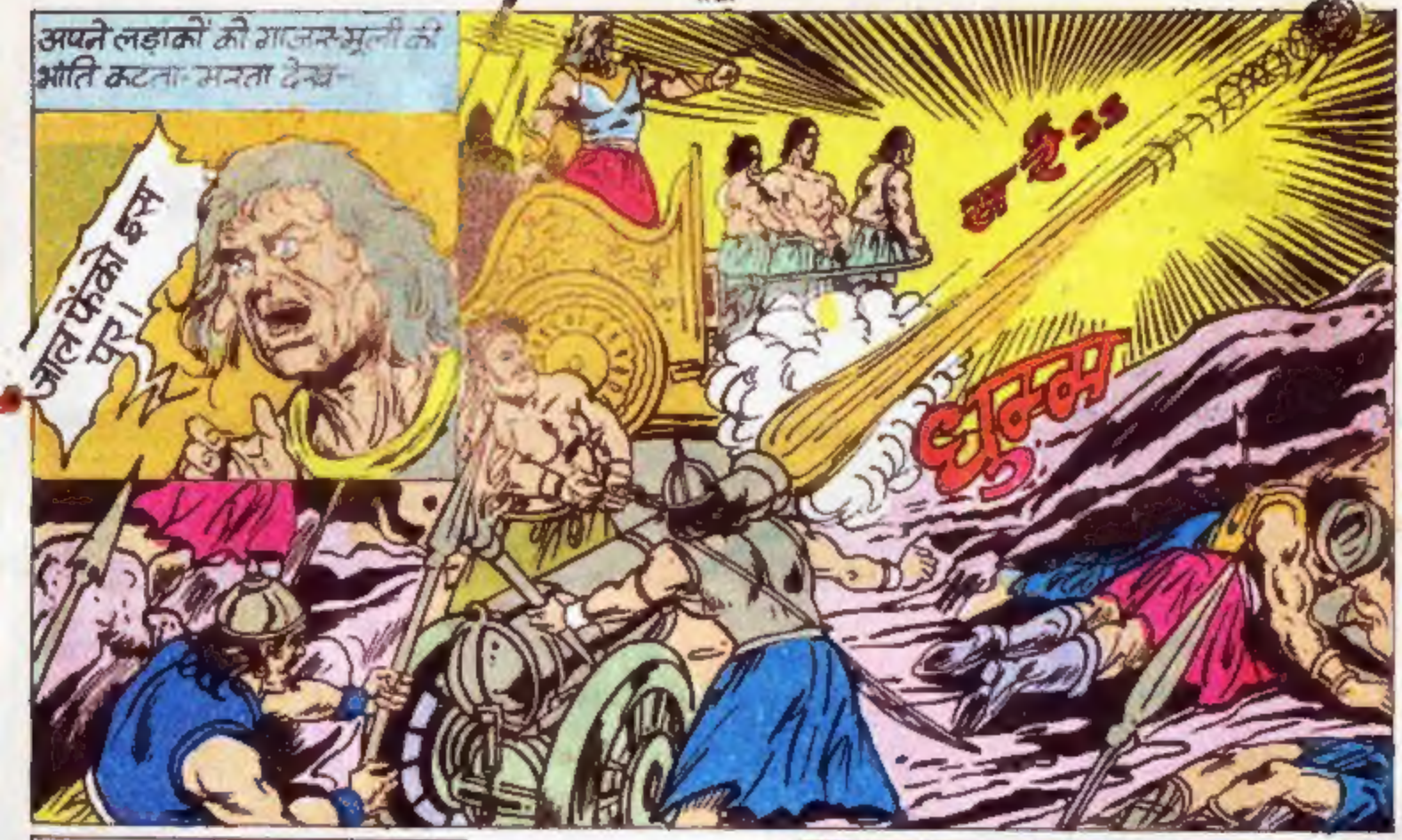
अपने लड़ाकों को गाजर-मूली की भाँति कटता-मरता देख-
जाल फेंको इस पर!
सर्र्र्र
धुम्म

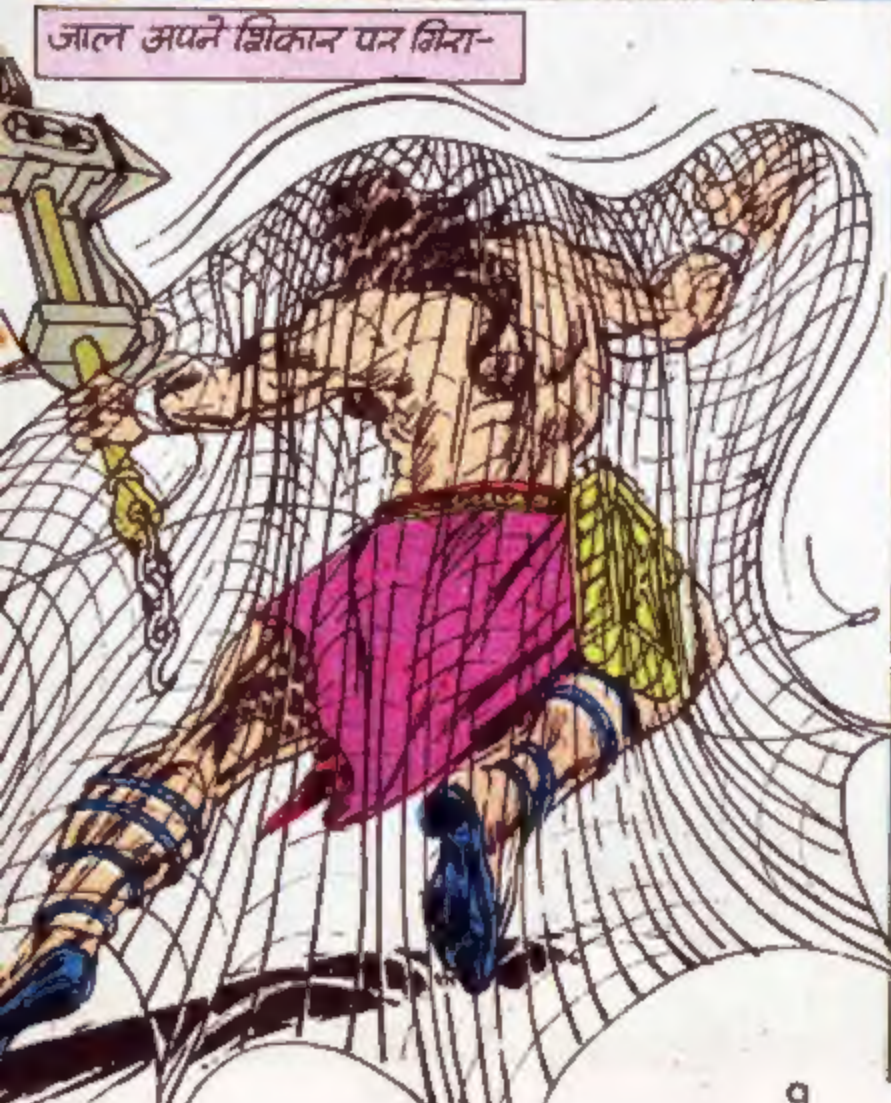
जाल अपने शिकार पर गिरा-

और 'शक्ति का देवता' फड़फड़ा उठा-
उफ्फ!

सरदार का ठहाका गूंज उठा-
हाहाहा! ले चलो अब सबको कैद करके जलयान पर।

शीघ्र ही सागर की विशाल छाती पर खेलता सा प्रतीत हो रहा था जलयान -.
उसी सागर की बांहों में झूल रहा था एक और जलयान-
वह आ रहा है जंजीबार!
क्या? मुझे दो जरा दूरबीन!
सचमुच वह आ रहा है!
चीखा जंजीबार -
वह आ रहा है!

सिर्फ... और सिर्फ एक शब्द गूंज रहा था जलयान पर-
वह आ रहा है।
क्या? आ रहा है वह?
वह आ रहा है!
आखिर आ कौन रहा है?
जलयान पर सवार हर शस्त्रास्त्र मोर्चाबन्दी पर डट गया-
वह आ ही गया आखिर-
हमला! कर दो...
...मस्तूल उड़ा दो उसका।

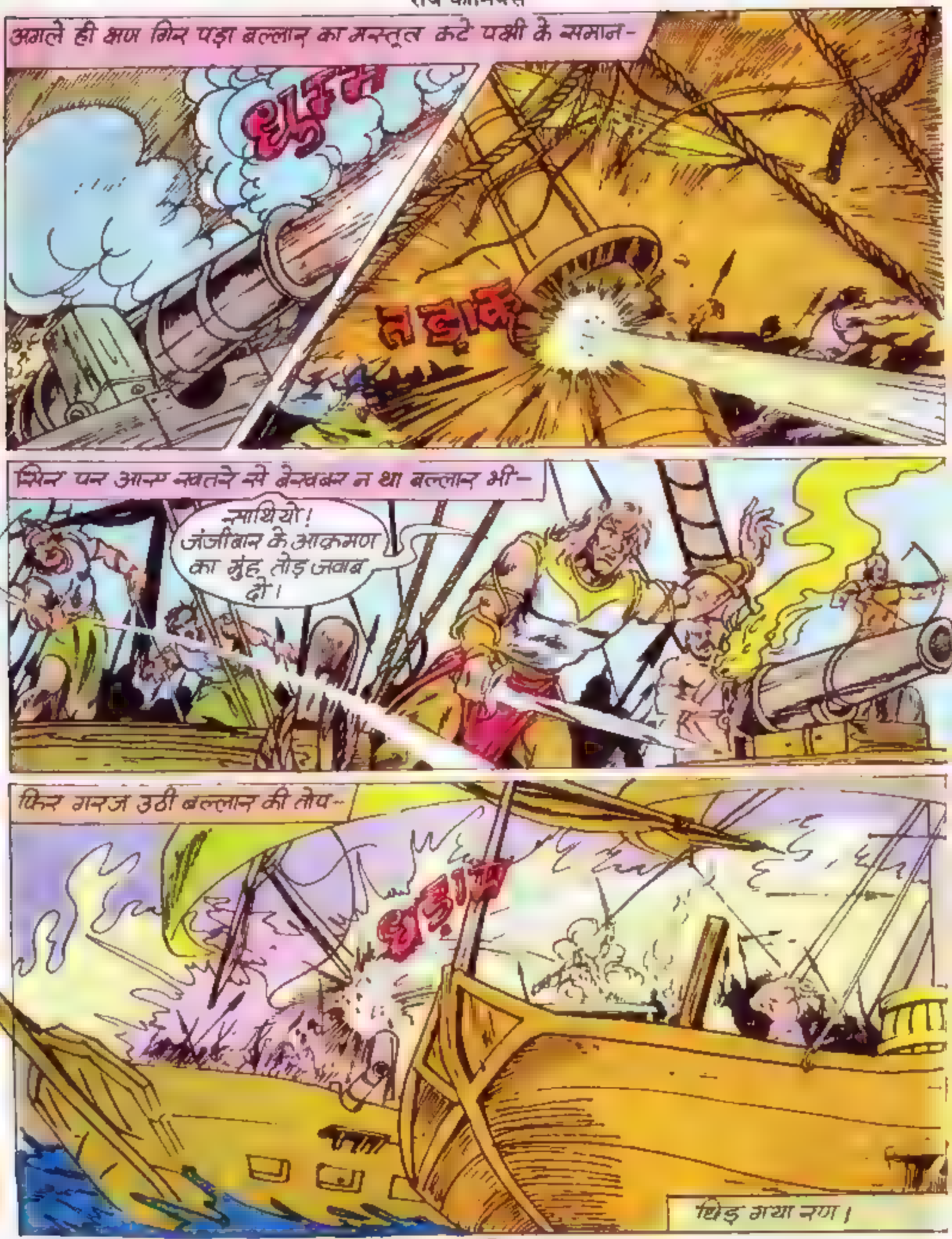
अगले ही क्षण गिर पड़ा बल्लान का मस्तूल कटे पक्षी के समान-
धड़ाम
धड़ाक
सिर पर आए खतरे से बेखबर न था बल्लान भी-
साथियो! जंजीबार के आक्रमण का मुंह तोड़ जवाब दो।
फिर गरज उठी बल्लान की तोप-
धड़ाम
छिड़ गया रण।

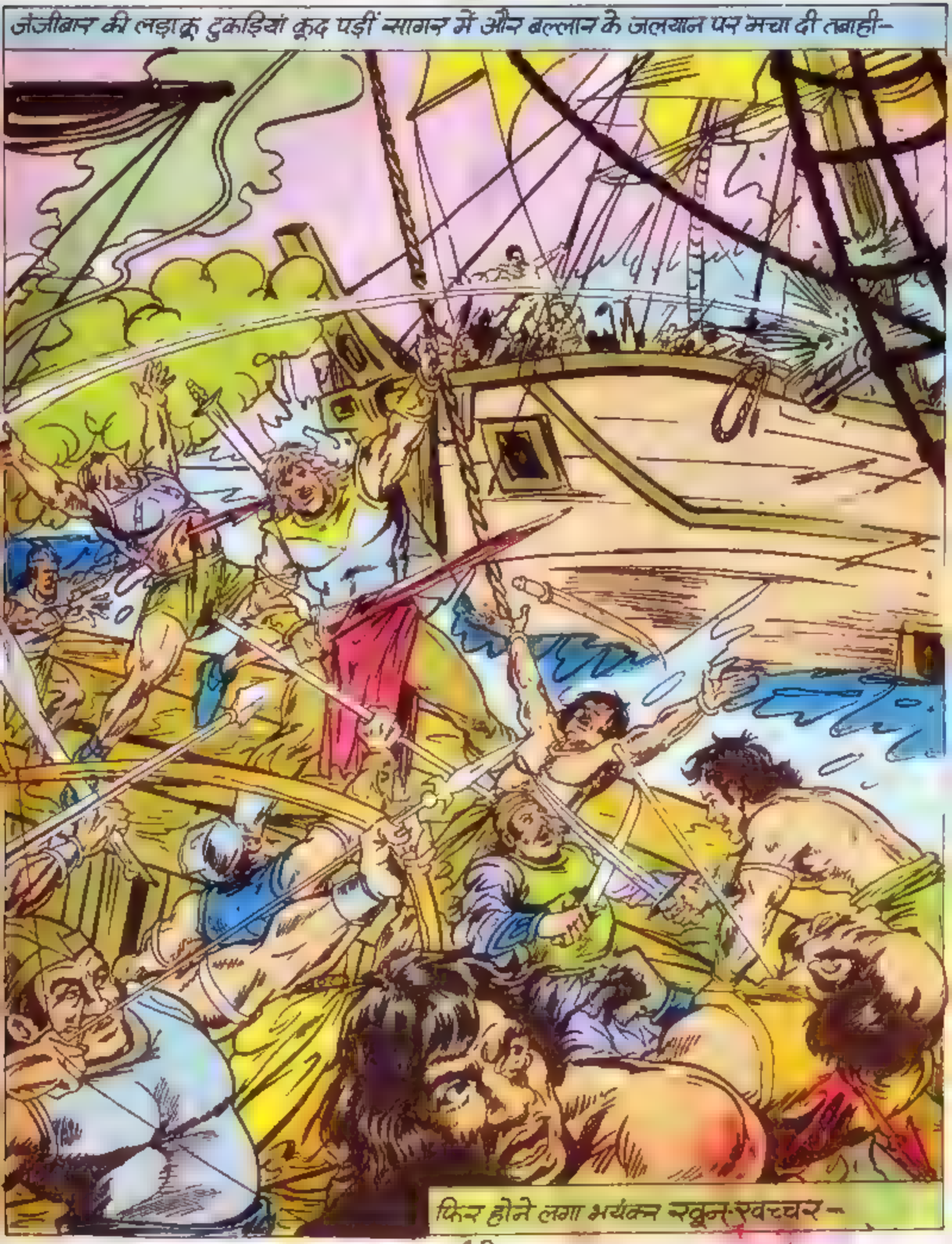
जंजीबार की लड़ाकू टुकड़ियां कूद पड़ीं सागर में और बल्लार के जलयान पर मचा दी तबाही–
फिर होने लगा भयंकर खून-खच्चर –

अचानक हुए इस हमले से बौखला से गए थे बल्लार के जाँबाज-

शत्रु अधिक संख्या में है। अतः जलयान को फिलहाल दूर ले जाना ही उचित रहेगा।

ऊपर बल्लार के सैनिकों में आपाधापी मची थी तो नीचे यान 'खेने' वालों पे वे कोड़ों की बरसात कर रहे थे—

साथियो! जलयान को तेज चलवाओ।

तेजी से चलाओ हाथ... जंजीबार ने हम पर आक्रमण कर दिया है।

बेरहम कोड़ों की बलि चढ़ गया एक-

सड़ाक

आह

शत्रुओं की तादाद ज्यादा है... अगर जलयान न भगाया तो... हम सब मारे जायेंगे।

ये... बेरहम इंसान मेरे साथियों को कोड़ों से मार ही डालेंगे। मुझे कुछ करना चाहिए।

उठ खड़ा हुआ योद्धा-
बल्लार, मैं तुम्हें जंजीरों के हमले से बचा सकता है।
नहीं नहीं... तुमने अकेले ही मेरे बीसियों आदमियों का सफाया कर डाला था।
अगर मैं तुम्हें आजाद कर दूंगा तो तुम हमीं पर आक्रमण कर दोगे।
नहीं बल्लार!
तुम?
हैरत का सागर भरा था बल्लार के अल्फाज़ों में-
मैं अपने हथियार दकमानघन की शपथ लेता हूं कि तुम्हारे ऊपर हमला नहीं करूंगा।
एक योद्धा के हथियार की शपथ का मूल्य जानता था बल्लार-
खोल दो योद्धा को।

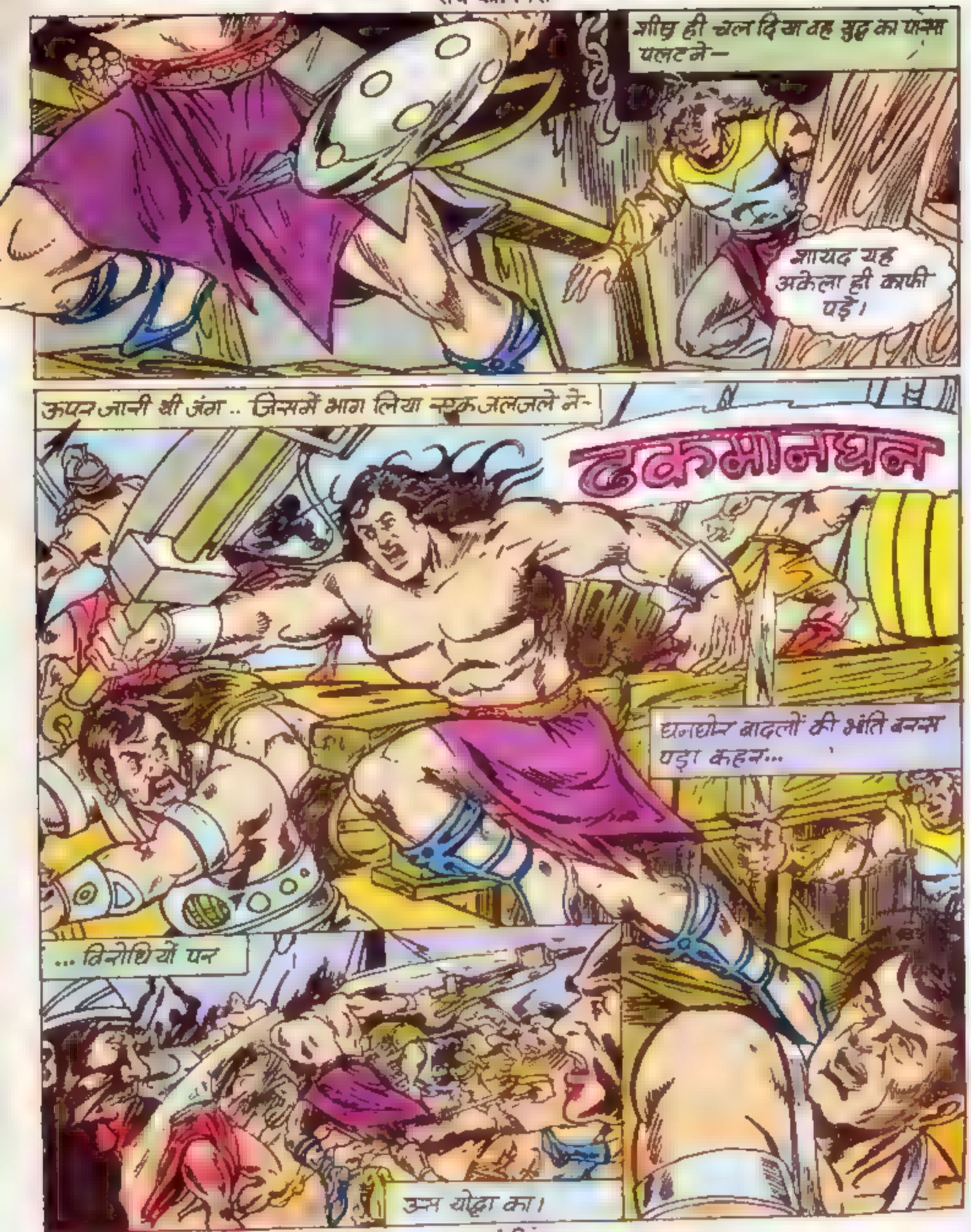
शीघ्र ही चल दिया वह युद्ध का पासा पलटने—
शायद यह अकेला ही काफी पड़े।
ऊपर जाकी थी जंग .. जिसमें भाग लिया एक जलजले ने-
डकमानधन
घनघोर बादलों की भांति बरस पड़ा कहर...
... विनोशियो पर
उस योद्धा का।

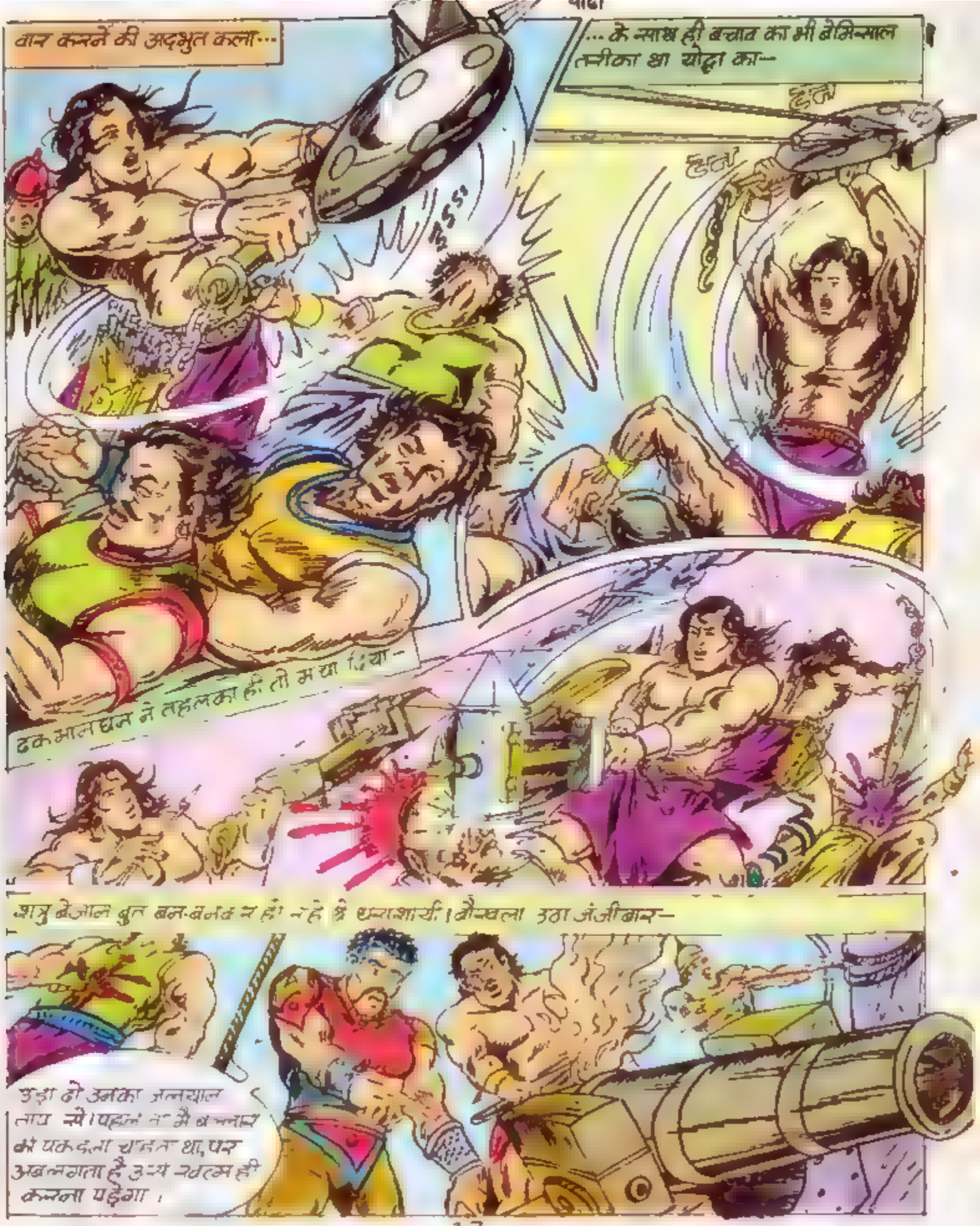
वार करने की अद्भुत कला...
... के साथ ही बचाव का भी बेमिसाल तरीका था योद्धा का—
ढक्कन
ढक्कन
ढक्कनघन ने तहलका मचा दिया—
शत्रु बेजान बुत बन-बनकर गिरे रहे थे एकाएक। बौखला उठा जंजीबार—
उड़ा दो उनका जलयान तात्र से। पहले तो मैं बच्चों से पकड़ना चाहता था, पर अब लगता है उन्हें खत्म ही करना पड़ेगा।

बल्लान ने देख लिया था उन्हें-
योद्धा ये तोप से गोला दाग रहे हैं!
सनसनाया रस्सा तीर कमानघन से-
और गोला दागने से पहले ही तोपची को दाग दिया योद्धा के तीर ने
ओह नो
फिर योद्धा ने भरी उछाल-

और योद्धा को देखा तो बस देखता ही रह गया जंजीबार-
जंजीबार
ये... यह तो वही है... महारानी गांधारी को तलाश थी जिसकी!
जंजीबार! हमें इस शस्त्र की तलाश है...
उसी पल एक ही झटके से टूट गया उसका दिवास्वान-
धाड़
ओफ्फ!
साथियो, पकड़ लो इसे!
मगर पकड़ना तो दूर वे तो थू भी न पा रहे थे उस विद्युत को-

फिर बड़ा क्रोध का ज्वालामुखी जंजीबार की तरफ-

मुझे शाबरी तक खबर पहुंचानी है।

अगले ही पल कूद पड़ा वह जलयान से-

इससे युद्ध करना तो आत्महत्या करने के बराबर है।

और.. आश्चर्यजनक रूप से दौड़ लगा दी उसने सागर की लहरों पर, मानों पानी पर नहीं ठोस धरती पर पड़ रहे हों उनके कदम-

?

जबकि इधर-

SSS

जलयान के तल पर पड़ा जबरदस्त वार

धकमानघन का-

धड़ाक

उमड़ पड़ा पानी का सैलाब...

अपने लगा सागर जलयान की गोद में-

फलस्वरूप... समाधि लेने लगा वह सागर में-

उफ्फ!

हैऽऽ

आह!!!

उसके सागर में जलमग्न होने से पहले कूद गया योद्धा-

?!?!?!

और-

लो बल्लाम! कैद कर लो मुझे।

?

बल्लार, आंखें फाड़े ताकता रह गया उसे। मानो इंसान नहीं कोई अवतार हो वह-

मैं तुम्हें क्या कैद करूंगा योद्धा, तुम्हारी वीरता और पराक्रम का तो मैं स्वयं गुलाम बन गया हूं।

क्या... यानि कि तुम...!

हां... शायद अचम्भा हो रहा हो तुम्हें... मगर यकीन करो आज तक मैं गुलामों की मलिका लोहांगी का गुलाम था।
पर आज से सिर्फ और सिर्फ तेरा गुलाम है बल्लाल।
बलशाली योद्धा सोम क्या हृदय भी रखता था-
बल्लाल... मुझे गुलामों की नहीं मित्रों की जरूरत है... गुलामों की मलिका के आतंक का अंत करने के लिए तुमसे अच्छा मित्र कौन हो सकता है
योद्धा !! मित्र !!
मैं भी गुलामों की मलिका के अत्याचारों को नापसंद करता हूं। उसका अंत अवश्य होगा मित्र ...!
उधर समुद्र के बीचोंबीच तैर रहा था एक हिमशैल-
और उस हिमशैल में था-
जंजीबार...
हां राजकुमारी शालनी.. हमने आक्रमण किया था बल्लाल पर। और वहीं नजर आया था वह।

वह जिसकी आपको तलाश थी वर्षों से, वह जिसकी आप रोज पूजा करती हैं, और जिसके लिए आपने आज तक विवाह नहीं किया
योद्धा कहां है योद्धा?
सारी राम कहानी सुनाकर-
वह... बल्लार की तरफ से लड़ा था... कमाल का योद्धा है वह।
इसने आज तक गुलामों की मलिका अपनी बहन की हरकतें माफ की हैं!
मगर अब मैं यह बात नजर अंदाज नहीं करूंगी... योद्धा मेरा है.. सिर्फ मेरा... हम आक्रमण करेंगे।
शब्द नहीं हुंकार निकल रही थी शांबरी के मुख से-
और लोहांगी- गुलामों की मलिका-
क्या अनर्गल बात बके जा रहे हो अमात्य?
मलिका आलम! मैं सच कह रहा हूं। बल्लार का जलयान तट पर आ चुका है और उसने अपने साथियों सहित विद्रोह कर दिया है।

सारे जहान की हैरत मानो सिमट कर लोहांगी की जुबान पर आ गई–
विद्रोह?!!
फिर फुंफकारी–
विद्रोह रूपी सर्प के फन उठाने से पहले हम उसका फन कुचल देंगे।
सागर तट के
तट रक्षकों पर गाज गिर रही थी–
विद्रोहियों की–
और इस विद्रोह की मुख्य ताकत था योद्धा
हिनेन सिंह
आइऽऽ
तथा उसका दबंगपन–

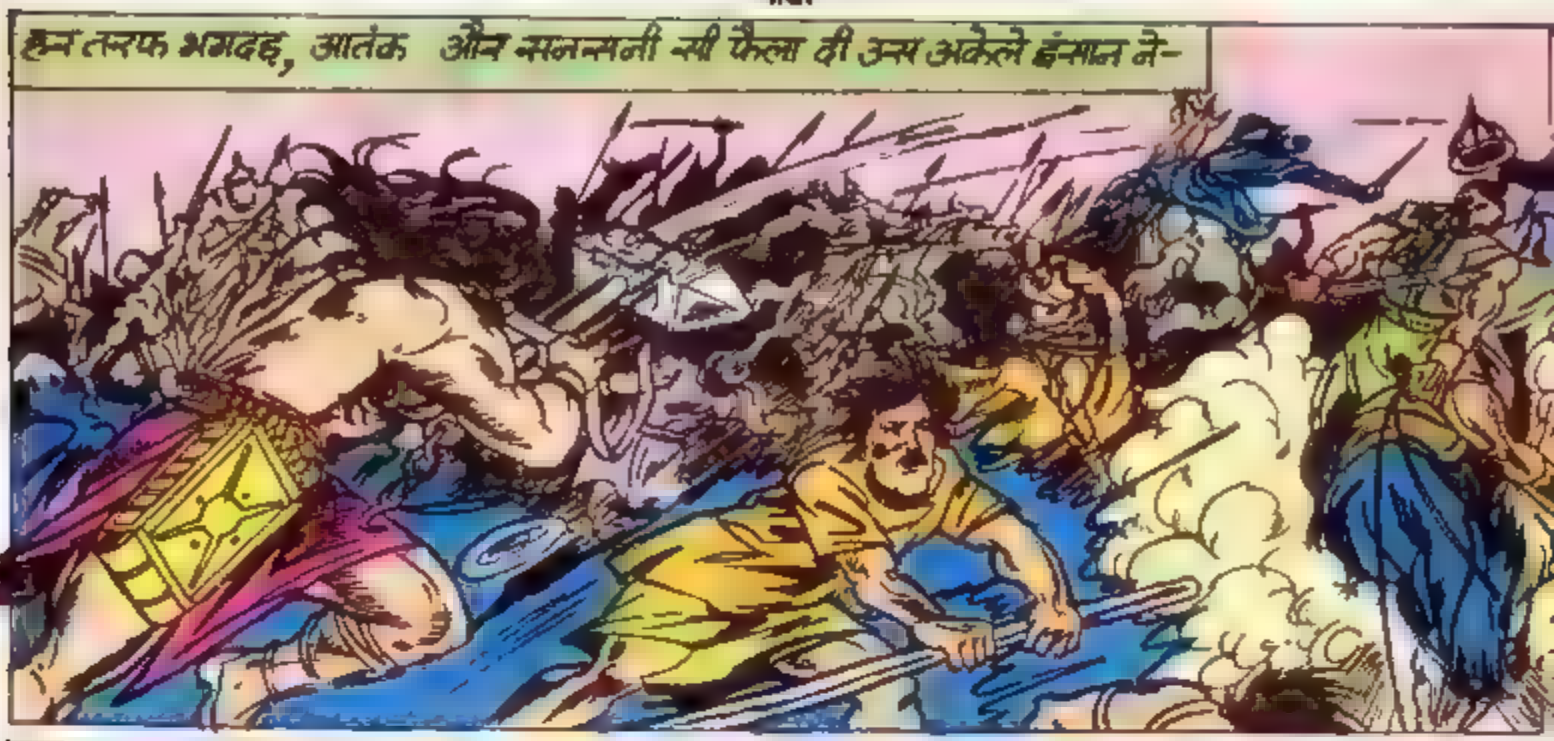
इस तरफ भगदड़, आतंक और सनसनी सी फैला दी उस अकेले इंसान ने-

उसी वक्त तट से आ सटा हिम शैल-

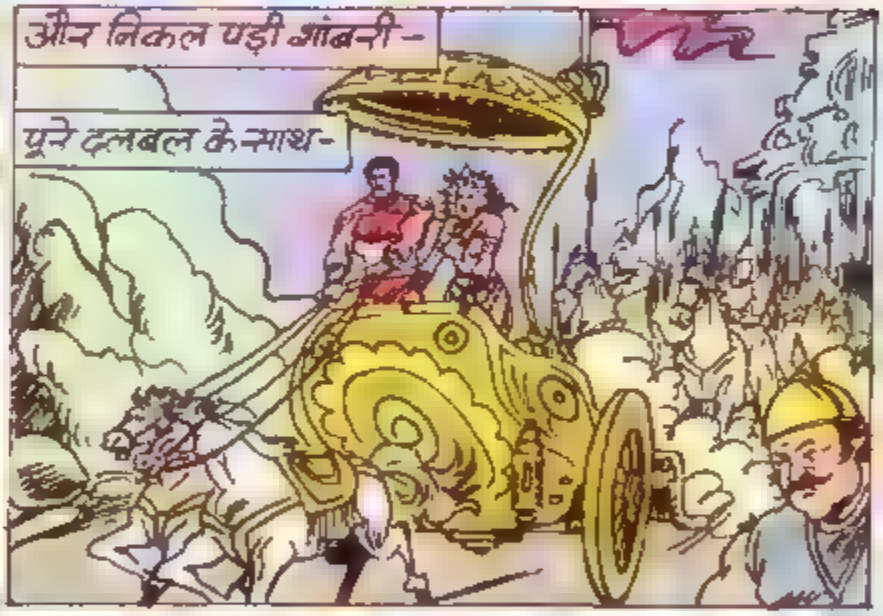
और निकल पड़ी गाड़ी-
पूरे दलबल के साथ-

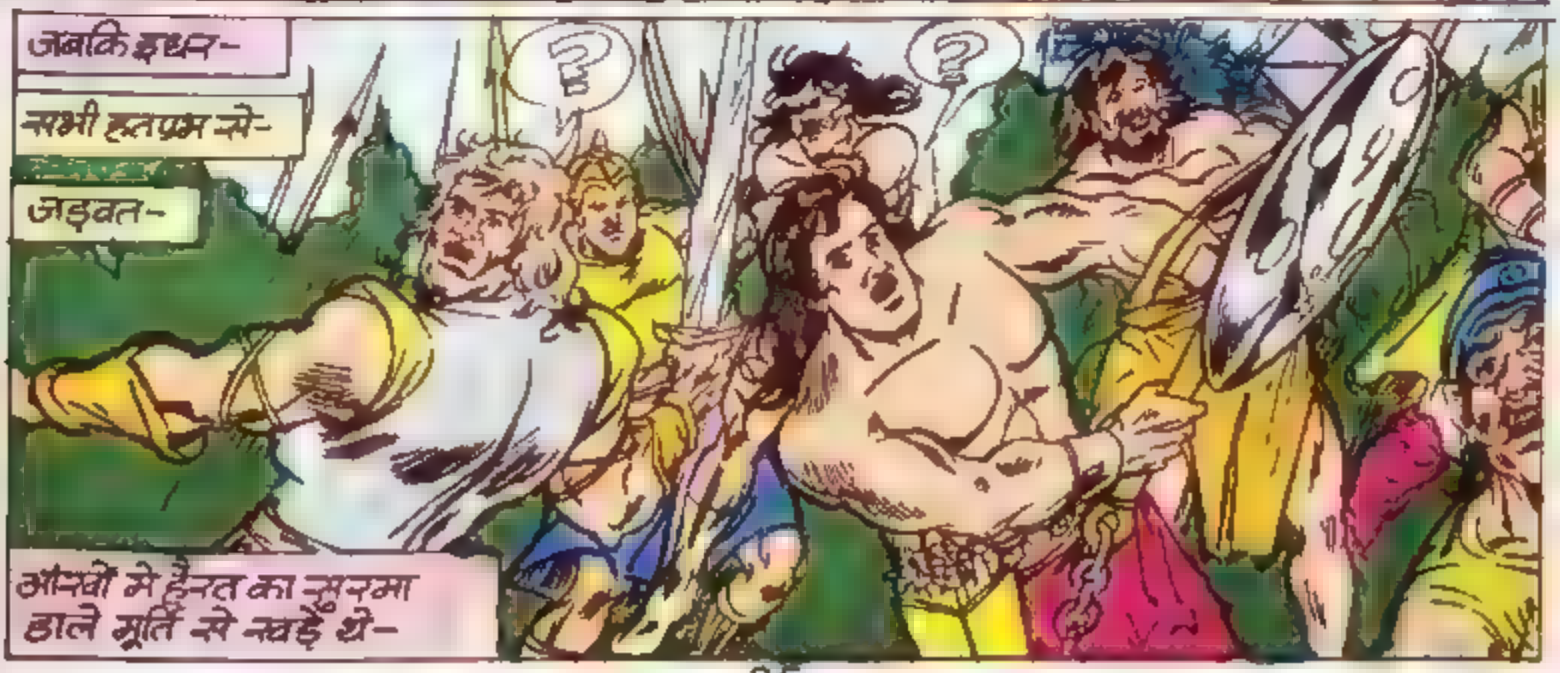
जबकि इधर-
सभी हतप्रभ से-
जड़वत-
आंखों में हैरत का सूरमा डाले मूर्ति से खड़े थे-

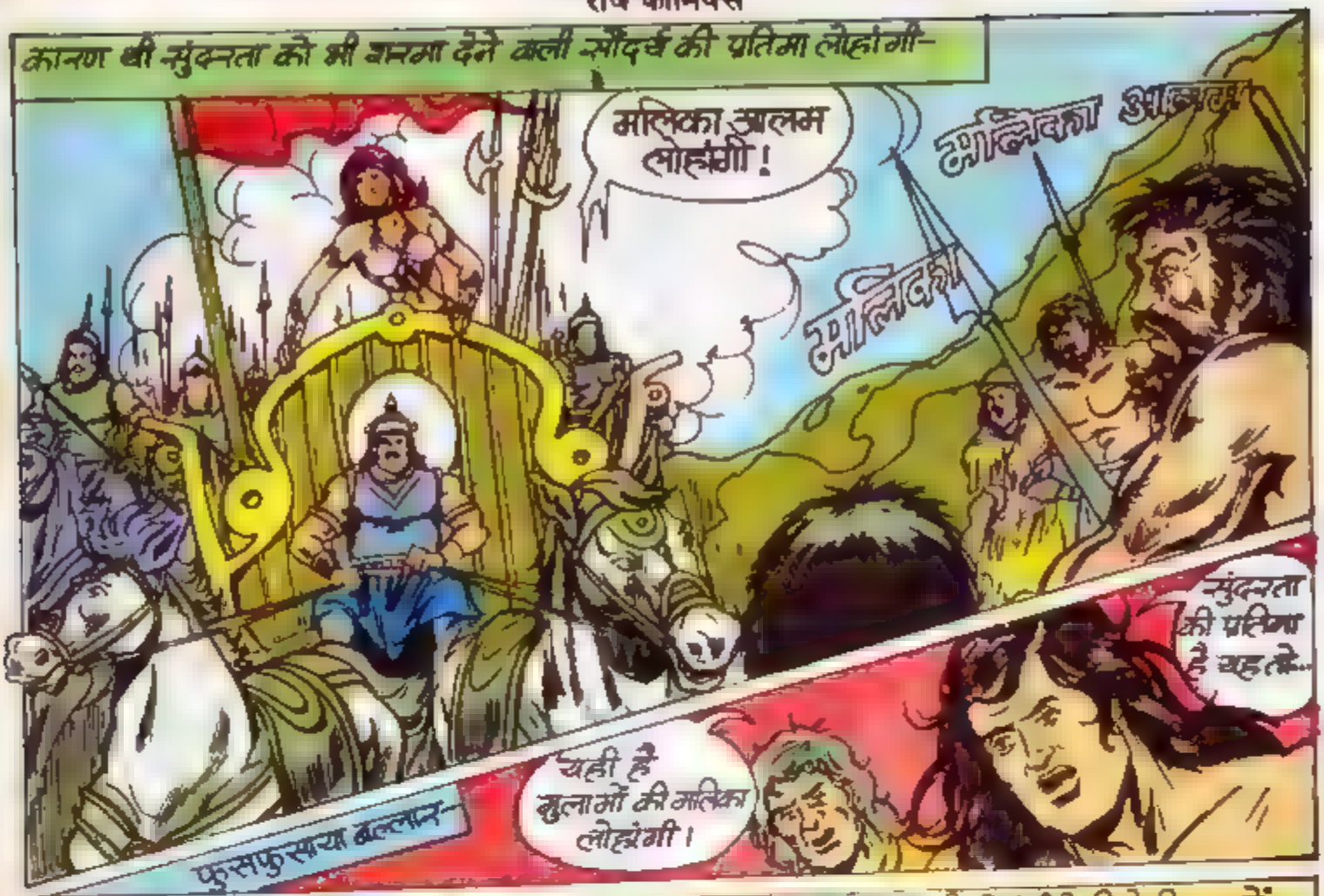
कानन की सुंदरता को भी शरमा देने वाली सौंदर्य की प्रतिमा लोहांगी–
मल्लिका आलम लोहांगी!
मल्लिका आलम!
मल्लिका!
सुंदरता की प्रतिमा है यह तो...
यही है गुलामों की मल्लिका लोहांगी।
फुसफुसाया बल्लार–

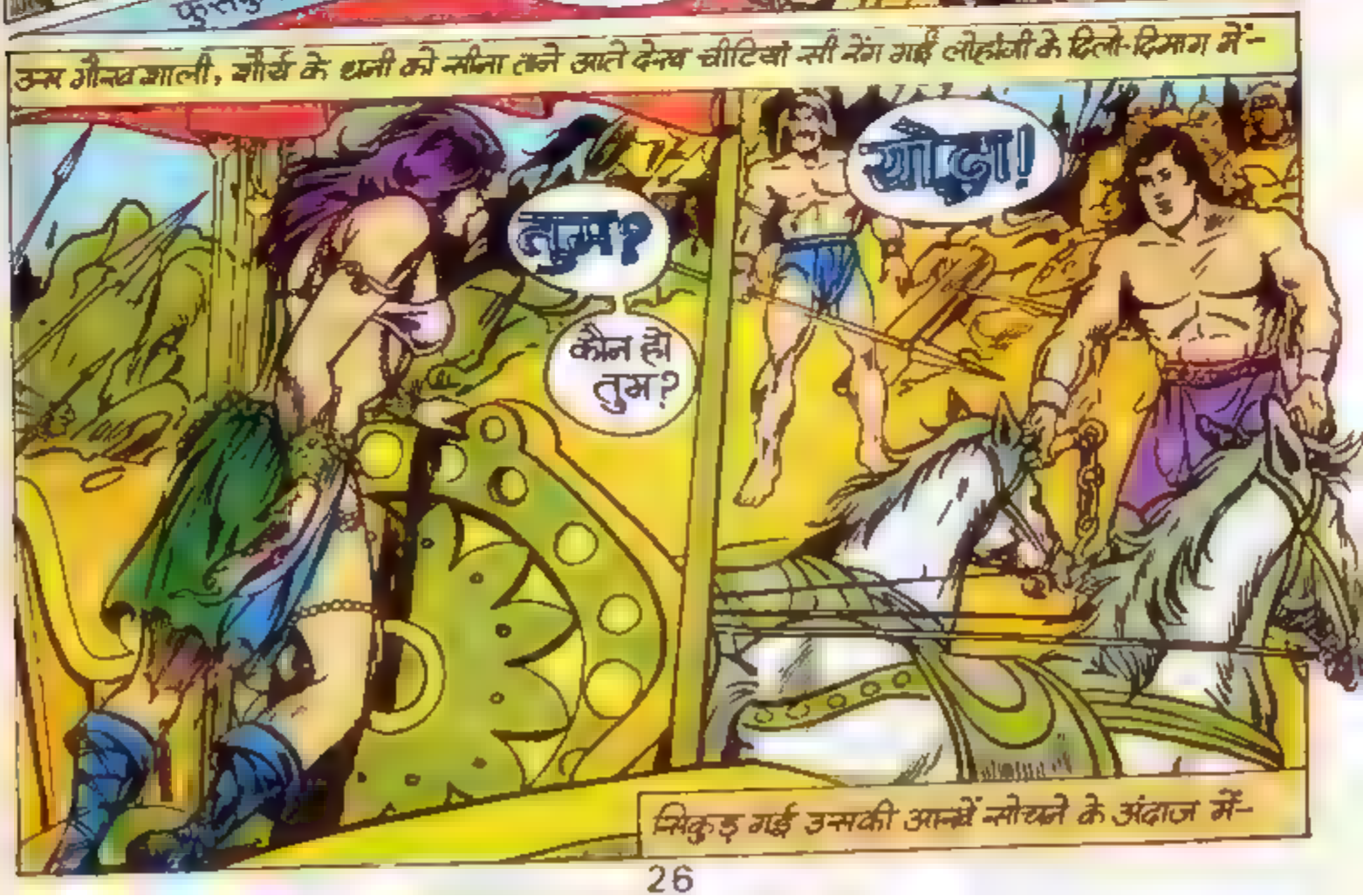
उस मौन्य शाली, शौर्य के धनी को सीना तने आते देख चींटियों सी रेंग गईं लोहांगी के दिलो-दिमाग में–
योद्धा!
तुम?
कौन हो तुम?
सिकुड़ गईं उसकी आंखें सोचने के अंदाज में–

घुमड़ गया एक चित्र उसके जेहन में-
तेजाल देख रहा है... लोहांगी! एक दिन यह आएगा... जरूर आएगा तेरी दुनिया तबाह करने
यह मेनी दुनिया तबाह करे उससे पहले मैं खत्म कर दूंगी उसे।
उठा लिया कोमल हाथों में भाला उसने
योद्धा... मेरे सेवक बल्लाल को भड़का कर विद्रोही बनाने वाले... मरने के लिए तैयार हो जा।
लोहांगी... मेरे क्रोध की ज्वाला से बचना चाहती है तो अभी गुलामों को मुक्त कर दे
उसी पल हुआ एक चमत्कार-
सामने थी शोभरी-
लोहांगी... बेकसूरों की जान में ले मुझे ले जाने दे योद्धा को
हर्षित नहीं शोभरी

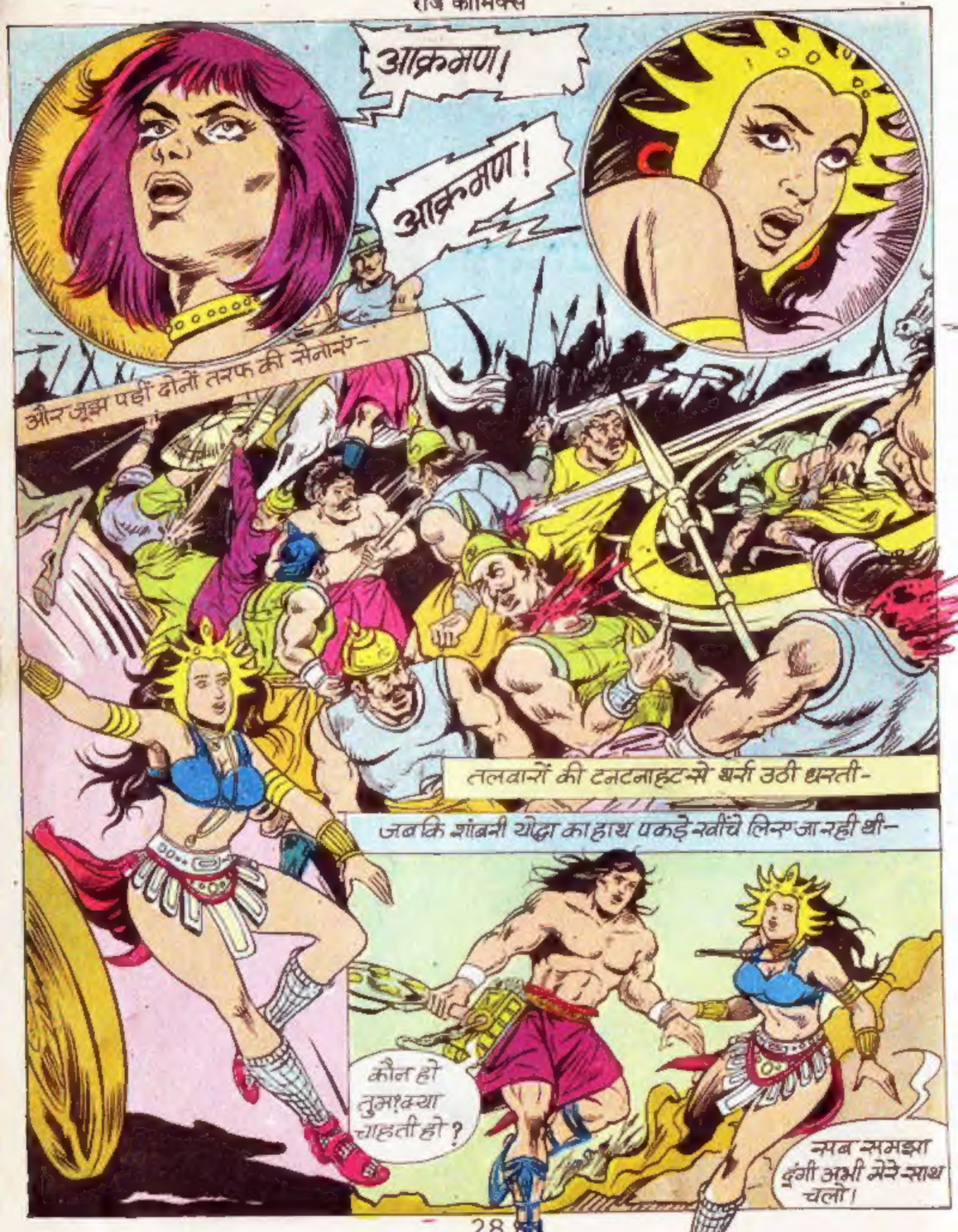
आक्रमण!
आक्रमण!
और युद्ध पर्वी दोनों तरफ की सेनाएं–
तलवारों की टनटनाहट से धरती उठी धरती–
जबकि शंबनी योद्धा का हाथ पकड़े खींचे लिए जा रही थी–
कौन हो तुम! क्या चाहती हो?
सब समझा दूंगी अभी मेरे साथ चलो!

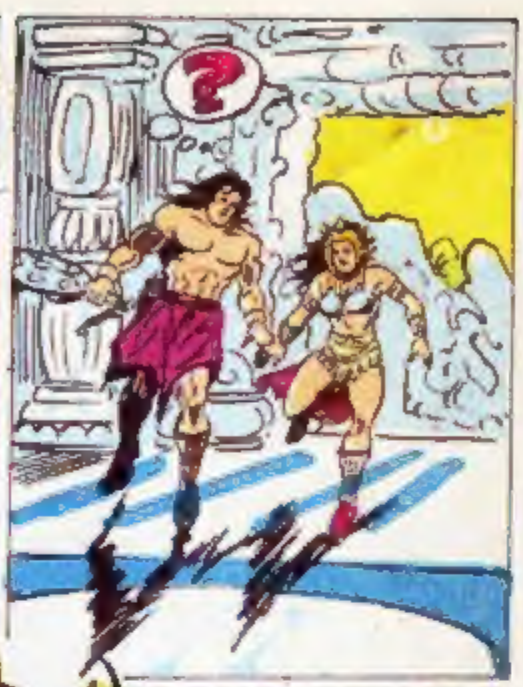

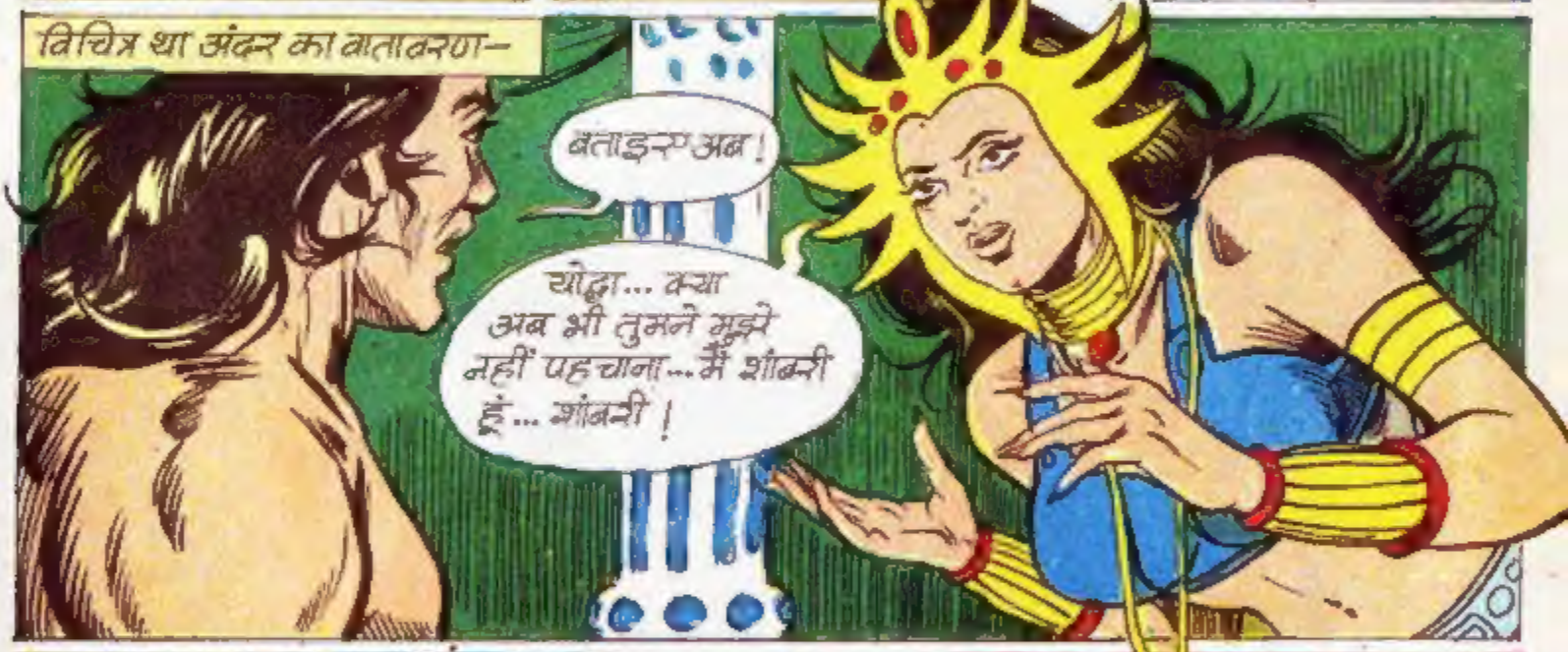
विचित्र था अंदर का वातावरण–
बताइए अब!
योद्धा... क्या अब भी तुमने मुझे नहीं पहचाना... मैं शंबरी हूं... शंबरी!

शंबरी!
हां योद्धा... तुमने मुझसे एक वादा किया था दिव्य शक्ति लाकर देने का...!

दिव्यशक्ति
कुछ समझ न पा रहा था योद्धा–

उसी पल एक और शनक्स आ गया धिपता-धिपता-

तो...शांबरी दिव्यशक्ति के लिए... योद्धा का इंतजार कर रही थी- पर मैं इसे दिव्यशक्ति लाने से पहले यहीं पर खत्म कर दूंगा।

लेकिन वह भी था किसी के निशाने पर-

आज जंजीबार नहीं बच सकता मेरे से।

तभी उछल पड़े दोनों-

तुम अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकती शांबरी...

लोहांगी!

लोहांगी!

लोहांगी के मुंह से ठहाकों का झरना फूट पड़ा-

??

हा हा हा...मेरी दुनिया नष्ट करने का सपना देखने वालो... मौत तुम्हारे सामने खड़ी है।

हा हा हा

??

और मरने के उसी क्षण में समय का पैंडुलम ले आया योद्धा को वर्तमानकाल में-

वर्तमान में भी योद्धा पर तनी थी एक रिवॉल्वर-

क्यों बे कितनी देर से पूछ रहा हूं जवाब क्यों नहीं देता ?

अपना हीरे वाला हथियार हमें दे, और फूट यहां से।

जाने कब विद्युत गति से चले योद्धा के हाथ-

धिशुम

रिवॉल्वर धारी को जब पता चला तो वह सड़क पर छटपटा रहा था-

??

उसके बाद किसी ने भी वहां रुकने की हिम्मत न दिखाई-

भागो रे भागो।

भागने में ही भलाई है।

बूह... जान बची पर बत्तीसी गंवाई।

और योद्धा के दिमाग में हथौड़े सी चोट कर रहा था एक सवाल.

शांबरी... लोहांगी... जंजीबार... और मेरा मित्र बल्लार भी जिंदा होंगे ?..और होंगे तो कहां होंगे ? किस हाल में होंगे ?

जानने के लिये पढ़िये योद्धा सीरीज का आगामी कॉमिक्स "आक्रमण"